3

गिल्लू

पिछले पाठों में आप एक कहानी और कुछ दोहे पढ़ चुके हैं। आइए, अब एक नई साहित्य विधा रेखाचित्र पढ़ते हैं।

आप जानते हैं कि मनुष्य और दूसरे जीवों का संबंध कितना महत्त्वपूर्ण है। कई बार पशु–पक्षी या अन्य प्राणी अपने प्रेम भरे व्यवहार, अपनेपन और समझदारी से हमें प्रभावित कर देते हैं। उनके साथ अच्छा व्यवहार करें, तो वे भी हमें अपना मानने लगते हैं, हमारे सुख-दुख के साथी बन जाते हैं। आपने देखा होगा कि पशु-पक्षी या कोई अन्य जीव किसी व्यक्ति से बहुत घुल-मिल जाता है, वह व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग बन जाता है। उसके न रहने पर, उसे याद करके व्यक्ति बहुत दुखी होता है।

यह रेखाचित्र एक छोटे-से प्राणी– गिलहरी की याद में लिखा गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- मनुष्य और पशु-पक्षी तथा अन्य जीवों के परस्पर संबंध का उल्लेख कर सकेंगे;
- वात्सल्य तथा ममता जैसे भावों का वर्णन कर सकेंगे;
- मन को छूने वाले स्थलों के सकारात्मक प्रभाव का उल्लेख कर सकेंगे;
- इस रेखाचित्र की विशेषताओं और भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- अपने संपर्क में आए मनुष्यों और अन्य प्राणियों के व्यवहार के विषय में लिख सकेंगे।

टिप्पणी

3.1 मूल पाठ

इस पाठ में आप गिल्लू नामक गिलहरी के बारे में पढ़ने जा रहे हैं। आपकी सहायता के लिए कठिन शब्दों के अर्थ मूल पाठ के साथ दिए जा रहे हैं। आइए, इस पाठ को एक बार पढ़ लेते हैं।

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देख कर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिप कर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूद कर मुझे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्‌टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सबेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ-छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं।

यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है— एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के, उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव-काँव करने को अवमानना के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे-से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का छोटा-सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोंचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे। अतः वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका पड़ा था।

सबने कहा, कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद

चित्र 3.1

शब्दार्थ

- अनायास – यूँही, बिना प्रयास के।
- हरीतिमा – हरियाली।
- स्वर्णिम – सोने जैसा, सुनहरा।
- काकभुशुंडि – कौआ, एक ऋषि का नाम
- समादृत – सम्मानित
- अवमानित – तिरस्कृत
- पुरखे – पुराने लोग (बुजुर्ग)/दादा-परदादा।
- काक – कौआ।
- अवतीर्ण – प्रकट होना।
- दूरस्थ – दूर स्थित।
- कर्कश – कानों को बुरा लगने वाला
- काकपुराण – कौवे का पुराण।
- काक-द्वय – दोनों कौवे।
- छुआ-छुऔवल – एक-दूसरे को छूने का एक प्रकार का खेल
- संधि – मिलन-बिंदु
- जीव – प्राणी
- दृष्टि – नज़र
- संभवतः – शायद
- सुलभ – सरलता से प्राप्त
- आहार – भोजन
- लघुप्राण – छोटा प्राणी
- निश्चेष्ट – जो हिलडुल न रहा हो

यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे।

परंतु मन नहीं माना— उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेन्सिलिन का मरहम लगाया। रुई की पतली बत्ती दूध में भिगोकर जैसे-तैसे उसके नन्हे से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूँदें दोनों ओर ढुलक गईं।

चित्र 3.2

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हे पंजों से पकड़ कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर-उधर देखने लगा।

तीन-चार मास में उसके स्निग्ध रोएँ, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछा कर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया। वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिला कर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों-सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता-समझता रहता था। परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

चित्र 3.3

जब मैं लिखने बैठती, तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेज़ी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

टिप्पणी

शब्दार्थ

रक्त	=	खून
पेन्सिलिन	=	घाव पर लगाने वाली एक प्रकार की दवाई
ढुलक जाना	=	गिर जाना
उपचार	=	इलाज
उपरांत	=	बाद
आश्वस्त	=	चैन में आना
मास	=	महीना
स्निग्ध	=	चिकना
झब्बेदार	=	ख़ूब बालों वाली
विस्मित	=	आश्चर्यचकित
स्वयं	=	खुद
कार्यकलाप	=	गतिविधि
मनका	=	मोती
तीव्र	=	तेज़
उपाय	=	तरीका

शब्दार्थ

लघुगात = छोटा-सा शरीर
अद्भुत = आश्चर्यजनक
मुक्त = खुला, आज़ाद, स्वतंत्र
नित्य का क्रम = रोज़ की बात
उत्पन्न = पैदा
चुन्नट – सलवटें।

गिल्लू

कभी मैं गिल्लू को पकड़ कर एक लंबे लिफ़ाफ़े में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघुगात लिफ़ाफ़े के भीतर बंद रहता। इस अद्भुत स्थिति में कभी-कभी घंटों मेज़ पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक्-चिक् करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफ़ाफ़े से बाहर वाले पंजों से पकड़ कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम बसंत आया। नीम-चमेली की गंध मेरे कमरे में हौले-हौले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक्-चिक् करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देख कर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है। मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते-बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज़-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

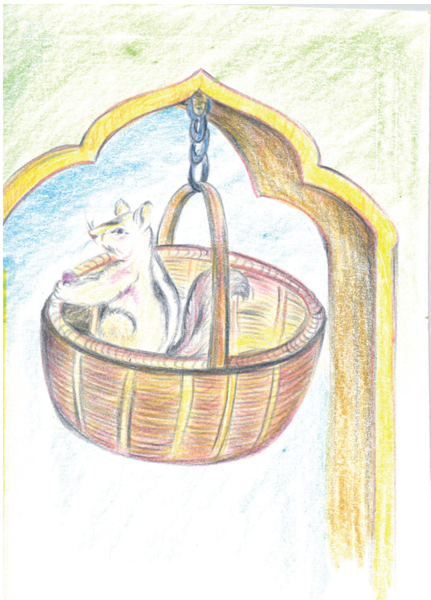

चित्र 3.4

मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना, हर डाल पर उछलता-कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परंतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज़ पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना

चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक-एक चावल उठाकर बड़ी सफ़ाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीज़ें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

चित्र 3.5

उसी बीच मुझे मोटर-दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दरवाज़ा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतर कर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देख कर तेज़ी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफ़ाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठ कर अपने नन्हे-नन्हे पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले-हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था। वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती, अतः गिल्लू की जीवन-यात्रा का अंत आ ही गया। दिन भर उसने न कुछ खाया और न बाहर गया। रात में अंत की यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

चित्र 3.6

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जाग कर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

टिप्पणी

शब्दार्थ

स्मरण	=	याद
अपवाद	=	नियम से भिन्न
खाद्य	=	खाने की वस्तु, खाने योग्य पदार्थ
दुर्घटना	=	बुरी घटना
आहत	=	घायल
अस्वस्थता	=	तबियत ठीक न होना
परिचारिका	=	सेवा करने वाली स्त्री
यातना	–	कष्ट, दुख।
मरणासन्न	–	मरने के नजदीक
उष्णता	–	गर्मी, ताप
प्रभात	–	प्रातःकाल।

उसका झूला उतार कर रख दिया गया और खिड़की की जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नयी पीढ़ी जाली के उस पार चिक-चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर बसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है– इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी– इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास मुझे संतोष देता है।

शब्दार्थ

स्पर्श – छूना।
समाधि – किसी की याद में उसके अंत्येष्टि-स्थल पर किया गया निर्माण।
पीताभ – पीली आभा वाले।

बोध प्रश्न

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'लघु प्राण' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

   (क) चिड़िया (ख) सोनजुही
   (ग) गिल्लू (घ) कली

2. लेखिका गिल्लू को अपने कमरे में क्यों लाई?

   (क) अन्य पशु-पक्षियों से मिलाने के लिए
   (ख) उसका जीवन बचाने के लिए
   (ग) अपने घर के लोगों को दिखाने के लिए
   (घ) उसे पालतू बनाने के लिए

3. लेखिका ने खिड़की की जाली का एक कोना खोल दिया ताकि–

   (क) बाहर की गिलहरियाँ अंदर आ सकें।
   (ख) बाहर से ठंडी हवा आ सके।
   (ग) गिल्लू आज़ादी से अंदर-बाहर आ-जा सके।
   (घ) नीम-चमेली की गंध कमरे में आ सके।

4. लेखिका के अस्वस्थ होने पर गिल्लू के स्नेह-भाव के विषय में दिए गए विकल्पों के आगे सही (√) और गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) वह लेखिका के साथ उसकी थाली में खाता था।
   (ख) वह लेखिका की अनुपस्थिति में काजू नहीं खाता था।
   (ग) वह लेखिका के बालों को अपने पंजों से सहलाता था।
   (घ) वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेट जाता था।

3.2 आइए समझें

आपने ध्यान दिया होगा कि इस पाठ में गिल्लू के पूरे जीवन की कुछ ऐसी महत्त्वपूर्ण बातों का संकेतों में उल्लेख किया गया है, जिनसे उसकी एक तस्वीर हमारे सामने उभर आती है। जी हाँ, ठीक उसी तरह, जैसे भूगोल विषय में आप कुछ लाइनों के माध्यम से यह जान जाते हैं कि यह भारत है या श्रीलंका या नेपाल या दिल्ली या उत्तर प्रदेश। इसे आप ख़ाका, स्केच या रेखाचित्र कहते हैं। ठीक उसी तरह जब पूरे विस्तृत विवरण की जगह कुछ ख़ास-ख़ास बातों का उल्लेख करके लेखक किसी के विषय में लिखते हैं, तो उसे साहित्य में 'रेखाचित्र' कहते हैं। जब इस रेखाचित्र में आत्मीय संबंध भी झलकने लगे तो वह 'संस्मरण' विधा के नज़दीक पहुँचने लगता है। इसीलिए, ऐसे रेखाचित्र को 'संस्मरणात्मक रेखाचित्र' कहते हैं। 'गिल्लू' एक संस्मरणात्मक रेखाचित्र है।

आपने प्रायः पेड़ों पर, घर के आस-पास या पार्क में गिलहरियों को उछलते-कूदते देखा होगा। आप इस तरह के प्राणियों को अक्सर देखते हैं। उनके भीतर भी कुछ संवेदनाएँ होती हैं। उनके साथ हमारा जैसा व्यवहार होता है, उसी के अनुसार वे भी हमारे साथ व्यवहार करते हैं।

प्रस्तुत रेखाचित्र 'गिल्लू' की लेखिका महादेवी वर्मा हैं। महादेवी वर्मा को पशु-पक्षियों से बहुत लगाव था। वे उन्हें अपने परिवार का अंग मानती थीं और उनके साथ आत्मीयता का अनुभव करती थीं। पशु-पक्षियों पर उनके कई रेखाचित्र हैं, जैसे– 'गौरा', जो एक गाय के बारे में है; 'नीलकंठ', जो एक मोर के बारे में है और 'सोना', जो एक हिरन पर है।

आइए, देखें कि लेखिका ने इस लघुप्राण जीव अर्थात् छोटे-से प्राणी गिल्लू की संवेदनशीलता को किस प्रकार हमारे सामने उभारा है। सुविधा के लिए हम इस पाठ को पाँच अंशों में बाँटकर पढ़ते हैं।

3.2.1 अंश–1

आइए, इस पाठ के पहले अंश– "सोनजुही में आज .... इधर-उधर देखने लगा।" को एक बार फिर ध्यानपूर्वक पढ़ लें।

रेखाचित्र के आरंभ में लेखिका अपने बगीचे में ताज़ा खिली हुई सोनजुही की पीली कली को देखकर पुरानी यादों में खो जाती है। सामान्यतः ऐसा होता है कि किसी वस्तु या स्थान के साथ हमारी यादें जुड़ी होती हैं और जब हम उन्हें देखते हैं तो अनायास ही वे यादें ताज़ा हो जाती हैं और हम अतीत में खो जाते हैं। वे यादें हमारे स्मृति-पटल

टिप्पणी

पर सिनेमा की तरह उभरने लगती हैं। हम उनमें ऐसे डूब जाते हैं कि उस समय के सुख-दुख के भाव हमें आज भी घेरने लगते हैं। यहाँ लेखिका के साथ भी ऐसा ही हुआ है।

एक समय था, जब लेखिका को सोनजुही बहुत आकर्षक और सुंदर लगती थी, किंतु गिल्लू उसके मन पर ऐसी अमिट छाप छोड़ जाता है कि उसे भुला पाना उसके लिए नामुमकिन हो जाता है। उसकी याद सोनजुही से जुड़ी है, क्योंकि वह छोटा-सा जीव उसी की छाया में बैठा करता था और नज़दीक आते ही लेखिका के कंधे पर कूद कर उसे चौंका देता था। लेखिका गिल्लू की स्मृति में खो जाती है। उसे लगता है कि उस सुनहरी कली के रूप में वह लघुप्राण (गिल्लू) ही उन्हें चौंकाने के लिए आया है। निहायत संवेदनशील गिल्लू की याद से लेखिका का मन भर आता है।

लेखिका को पहली बार गिल्लू निरीह स्थिति में दिखाई दिया था। वह शायद अपने घोंसले से गिरकर घायल हो गया था और कौवे उस पर अपनी चोंचों से प्रहार कर रहे थे। लेखिका ने कौवों की प्रवृत्ति का उल्लेख करने के लिए 'छुआ-छुऔवल' शब्द का प्रयोग किया है। बच्चे आपस में एक-दूसरे को छूने का खेल खेलते हैं, किंतु यहाँ इस शब्द का प्रयोग व्यंग्यात्मक रूप में किया गया है। वास्तव में, कौवे गिल्लू को चोंच मार-मार कर खाने का प्रयास कर रहे थे। वह तो संयोग था कि लेखिका की दृष्टि पड़ी और गिल्लू को बचाया जा सका। यहाँ लेखिका ने कौवों के स्वभाव का वर्णन किया है। वे बताती हैं कि कौवा एक विचित्र प्राणी है। विचित्र इसलिए कि यह जितना तिरस्कार पाता है, उतना ही सम्मान भी पाता है। हम जानते हैं कि कौवा अपने काले रंग व कर्कश आवाज़ के लिए अपमानित होता है, लेकिन पितर पक्ष में उसे अपनेपन के साथ खाना भी खिलाया जाता है।

हिंदू धर्म में देवी-देवताओं के साथ-साथ अपने पूर्वजों के प्रति भी देवत्व का भाव पाया जाता है। इसीलिए वर्ष में एक बार उनका श्राद्ध-कर्म किया जाता है। भादों के महीने की पूर्णिमा से लेकर क्वार की अमावस्या तक के सोलह दिन पितर पक्ष के रूप में मनाये जाते हैं। 'पितर' यानी परिवार के वे सदस्य, जिनकी मृत्यु हो चुकी है और 'पक्ष' यानी पूर्णिमा से अमावस्या तथा आमावस्या से पूर्णिमा तक के पंद्रह-पंद्रह दिन (मगर श्राद्ध के संदर्भ में सोलह दिन)।

परिवार के दिवंगत सदस्यों की मृत्यु की तिथि के दिन उनका 'श्राद्ध किया जाता है। इस दिन उनकी स्मृति में ब्राह्मणों को भोज कराया जाता है। ऐसी धारणा है कि पितर कौवे का रूप धरकर घर पर आते हैं, अतः सबसे पहले उनके लिए भोजन निकाला जाता है।

लेखिका ने यहाँ कौवे के लिए 'काकभुशुंडि' शब्द का प्रयोग किया है। काकभुशुंडि एक ऋषि थे, जो कौवे थे; जिनकी बुद्धि और ज्ञान की प्रशंसा भारतीय परंपरा में अक्सर की जाती है। कहा जाता है कि रामकथा को कहने वाले चार वक्ता थे और उसे सुनने

भारतीय केलेन्डर के अनुसार भी वर्ष में बारह महीने होते हैं—

1. चैत्र – चैत
2. वैशाख – बैशाख
3. ज्येष्ठ – जेठ
4. आषाढ – असाढ़
5. श्रावण – सावन
6. भाद्रपद – भादों
7. अश्विन – क्वार
8. कार्तिक – कातिक
9. मार्गशीर्ष – अगहन
10. पौष – पूस
11. माघ – माह
12. फाल्गुन – फागुन

वाले भी चार थे। इन वक्ताओं में से एक थे काकभुशुंडि, जिन्होंने गरुड़ को रामकथा सुनाई।

टिप्पणी

(i) पाठ को पढ़ते हुए आपके दिमाग में यह ज़रूर आया होगा कि 'गिलहरी' तो स्त्रीलिंग शब्द है, पर यहाँ उसके लिए पुल्लिंग क्रियाओं का प्रयोग किया गया है। ऐसा क्यों है, आइए इसे जानते हैं :

प्रायः पशु-पक्षियों के नाम पुल्लिंग होते हैं और उनके स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं, जैसे— शेर, घोड़ा, कुत्ता। इनके स्त्रीलिंग हैं— शेरनी, घोड़ी, कुतिया।

कुछ नाम अपने मूल रूप में स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे— बिल्ली का सामान्यतः स्त्रीलिंग रूप में प्रयोग होता है और इसके पुल्लिंग रूप के लिए 'बिलौटा' शब्द का प्रयोग किया जाता है। किंतु, इस तरह के अन्य शब्दों के पुल्लिंग के लिए 'नर' शब्द का प्रयोग किया जाता है; जैसे– नर चींटी। 'चींटी' का पुल्लिंग 'चींटा' नहीं है, वह एक अलग प्रजाति है, क्योंकि वह आकार-प्रकार और संभवतः स्वभाव में भी चींटी से भिन्न होता है।

इसी प्रकार 'भेड़िया' पुल्लिंग है और उसका स्त्रीलिंग बनाने के लिए मादा भेड़िया कर लिया जाता है। मूल नाम भेड़िया है, केवल उसके लिंग में परिवर्तन के लिए मादा शब्द जोड़ा गया है।

प्रायः ईकारांत ('ई' की मात्रा पर समाप्त होने वाले) शब्द स्त्रीलिंग होते हैं, किंतु कुछ पुल्लिंग भी होते हैं जैसे— हाथी, माली, इत्यादि।

गिलहरी मूलतः स्त्रीलिंग शब्द है, लेकिन इनमें नर और मादा दोनों होते हैं। महादेवी वर्मा ने गिल्लू को पुल्लिंग रूप में चित्रित किया है; क्योंकि वह नर गिलहरी है।

(ii) लेखिका ने 'मिट्टी होकर मिल गया होगा' वाक्यांश का प्रयोग एक ख़ास संदर्भ में किया है। एक निश्चित अवधि के पश्चात् शरीर का अंत होता है। माना जाता है कि हमारे शरीर का निर्माण करने वाले तत्त्व पाँच हैं– धरती (मिट्टी), जल, अग्नि, आकाश और वायु। मरने के पश्चात् हमारा शरीर इन्हीं में विलीन हो जाता है।

जब कोई मृत्यु को प्राप्त होता है तो उसके अंतिम संस्कार के अनेक तरीके हैं। इनमें से दो तरीके हैं— जलाना और दफ़न करना। पशुओं को जलाने की प्रथा हमारे समाज में नहीं है। उन्हें यूँ ही कहीं पर डाल दिया जाता है और उनका शरीर धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। यदि हम किसी पशु को बहुत प्यार करते हैं, तो उसे किसी स्थान पर मिट्टी में गाड़ देते हैं। गिल्लू को भी सोनजुही की जड़ में

दफ़नाया गया था, इसीलिए लेखिका को सोनजुही की ताज़ा खिली कली देखकर गिल्लू की याद आ गई।

(iii) हिन्दी के मूल शब्दों में उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर कुछ नये शब्द बनाये जाते हैं। उदाहरण के लिए पाठ में आए समादृत–अनादृत शब्दों को लिया जा सकता है। समादृत में 'आदृत' मूल शब्द है और उसमे 'सम्' उपसर्ग लगाकर 'समादृत' शब्द बनाया गया। इसी 'आदृत' में 'अन्' उपसर्ग लगा दने से अनादृत शब्द बन गया, जो समादृत का ठीक उल्टा है।

(iv) पाठ में 'पुराण' शब्द का प्रयोग किया गया है। 'पुराण' भारतीय संस्कृति के उन ग्रंथों को कहा जाता है, जिनमें अनेक प्रकार की आख्यानमूलक रचनाएँ हैं। किंतु पुराणों में केवल कहानियाँ ही नहीं हैं, बल्कि उनमें जीवन के विभिन्न पक्षों को लिया गया है।

क्रियाकलाप-3.1

मान लीजिए आप सड़क से गुज़र रहे हैं। सड़क पर आपको एक घायल व्यक्ति पड़ा दिखता है। आपको लगता है कि उसे अस्पताल पहुँचाने की ज़रूरत है। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे और क्यों? निम्नलिखित विकल्पों में से एक चुनिए और कारण सहित टिप्पणी कीजिए–

पुलिस को सूचना देंगे,एम्बुलेंस बुलाएँगे, भीड़ में से कुछ लोगों को साथ लेकर उसे अस्पताल ले जाएँगे इत्यादि।

....

....

....

3.2.2 अंश-2

आइए पाठ के 'तीन-चार मास में .... उसे कुतरता रहता।' अंश को एक बार पुनः पढ़ लेते हैं।

इससे पहले अंश में हमने देखा कि उपचार के बाद गिल्लू बच गया है। वह अपने सुंदर रूप से सबको चकित कर देता है। अब उसका नामकरण किया गया। उसकी पूरी प्रजाति को गिलहरी कहा जाता है। इसी साम्य पर लेखिका ने उसका नाम गिल्लू रख दिया। इस प्रकार जो नाम जातिवाचक संज्ञा के रूप में था, वह अब एक प्राणी विशेष के नाम के कारण व्यक्तिवाचक संज्ञा के रूप में बदल गया।

लेखिका ने गिल्लू के यौवन का चित्रण संकेत रूप में किया है। वास्तव में, जीवन की अवधि निश्चित होती है– पहले बचपन आता है, फिर युवावस्था, और उसके बाद बुढ़ापा। गिल्लू के जीवन में भी किशोरावस्था और युवावस्था आती है और उसके व्यक्तित्व में एकदम से परिवर्तन दिखाई देता है। यह शरीर-विज्ञान की स्वाभाविक प्रक्रिया है और

इस प्रकार का शारीरिक परिवर्तन पशु-पक्षियों की भाँति मनुष्य में भी आता है। लड़के-लड़कियों में भी यह शारीरिक परिवर्तन आता है और उस स्थिति में उनके सोचने-समझने के तरीके से लेकर व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं में परिवर्तन आता है। उनमें उन्मुक्तता एवं स्वायत्तता के साथ-साथ गंभीरता और ज़िम्मेदारी का भी बोध होता है।

इस अंश में लेखिका ने इस बात की ओर इशारा किया है कि हमें परोपकारी होना चाहिए और हमारा हृदय विशाल होना चाहिए। परदुखकातरता (दूसरे के दुख से दुखी होना) एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है। पशुओं के प्रति दया, सहानुभूति और मैत्री का भाव रखने से वे भी हमारी रक्षा और सुरक्षा का ध्यान रखते हैं। आपने अक्सर देखा होगा कि जब हम किसी पशु को प्यार के साथ रखते हैं, तो वह हमें अपना समझने लगता है और हमारे ऊपर किसी प्रकार की विपत्ति आती है, तो वह भी हमारी बेचैनी में बेचैन और दुख में दुखी में होता है। उदाहरण के तौर पर देखें तो हमारे अधिकांश साहित्य में इस तरह का चित्रण मिलता है, जैसा कि महादेवी वर्मा ने गिल्लू के संदर्भ में किया है। कालिदास के नाटक 'अभिज्ञान शाकुंतलम्' में जब शकुंतला कण्व ऋषि के आश्रम से विदा होती है, तो उसके वियोग में पशु-पक्षी सभी दुखी होते हैं और खाना तक नहीं खाते। इसे ही समानुभूति कहते हैं, जब किसी और का दुख हमारा दुख बन जाता है। गिल्लू का दुख महादेवी का दुख बन जाता है और जब महादेवी अस्वस्थ होती हैं, उनके दुख में स्वयं गिल्लू खाना नहीं खाता– सारे काजू उसके झूले में यूँ ही ज्यों-के-त्यों मिल जाते हैं। इसका उल्लेख हमें पाठ में आगे मिलता है।

आपने देखा होगा कि कुछ पशु या पक्षी अगर आपसे घुल-मिल जाते हैं, तो अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कर प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। लेखिका के साथ भी ऐसा ही होता है। गिल्लू उससे निकटता प्राप्त करने के लिए उछल-कूद करता है। कभी वह तेज़ी से परदे पर चढ़ जाता है, कभी लिफ़ाफ़े में बंद हो जाता है। यह क्रिया हमें भी गिल्लू के प्रति सहृदय तथा आत्मीय बना देती है। ऐसा लगता है, जैसे हम किसी बच्चे के साथ खेल-कूद कर रहे हों और वह अपनी मोहक अदाओं से हमें प्रभावित करने का प्रयास कर रहा हो। इस अंश में लेखिका ने उसके नटखटपन का भी सहज चित्रण किया है, जो अत्यंत आकर्षक लगता है।

इस अंश में लेखिका ने यह भी संकेत किया है कि पशु भी अपनी भाषा में अपने दुख-सुख का आभास कराते हैं। हम उनकी भाषा को उनके संकेतों के आधार पर अथवा उनके हाव-भाव के द्वारा समझ सकते हैं। वे या तो किसी प्रकार की आवाज़ निकालते हैं अथवा क्रियाओं के माध्यम से संकेत करते हैं। गिल्लू के चिक-चिक करके अपनी भूख मिटाने की इच्छा ज़ाहिर करने की प्रक्रिया का लेखिका ने बड़ी सजीवता और सहजता के साथ चित्रण किया है।

इस अंश में लेखिका ने गिल्लू के तीन महीने के हो जाने पर उसमें आने वाले शारीरिक और व्यवहारगत परिवर्तन का बड़ा सुंदर और सांकेतिक चित्रण किया है। आप जानते

ही होंगे कि प्राणीमात्र बचपन, जवानी और बुढ़ापे के सोपानों से गुज़रता है। जिस प्रजाति की जितनी जीवन-अवधि होती है, उसी के हिसाब से उसके जीवन में इन तीनों की अवधि भी निर्धारित होती है। गिलहरियों का कुल जीवन दो वर्ष का होने के कारण उनमें तीन-चार माह में जवानी के लक्षण आने लगते हैं।

गिल्लू के रोओं का चिकना होना, पूँछ का झब्बेदार होना और आँखों की चंचलता उसमें आए शारीरिक परिवर्तन हैं।

लेखिका ने गिल्लू के कमरे के बाहर और भीतर झाँकने का ज़िक्र किया है, जिसके द्वारा वे संकेत करना चाहती हैं कि गिल्लू इस संसार की विचित्र संरचना (बनावट) पर सोच-विचार करने लगा है। इस उम्र में आकर सभी के भीतर बदलाव की स्थिति आती है— पशु-पक्षियों में भी और मनुष्य में भी। किशोर-किशोरियों के मन में अनेक तरह की जिज्ञासाएँ होती हैं और वे उनका समाधान करने का प्रयास करते हैं। गिल्लू का लेखिका को चौंकाने का प्रयास करना, पर्दे पर सर्र से चढ़ना-उतरना आदि इसी प्रकार की क्रियाएँ हैं। अपनी समझदारी को वह जिस रूप में अभिव्यक्त करता था, वह लोगों को आश्चर्य में डालने वाला था। वह लेखिका के साथ इस प्रकार से व्यवहार करता था, जैसे कोई मनुष्य करता है। इससे इस बात का भी पता चलता है कि पशु-पक्षियों में भी मनुष्य की भाँति महसूस करने की शक्ति होती है।

पाठगत प्रश्न-3.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'गिल्लू' रेखाचित्र के साथ-साथ और किस विधा के नज़दीक है?

   (क) लघु कथा ☐ (ख) संस्मरण ☐

   (ग) डायरी ☐ (घ) रिपोर्ताज ☐

2. 'कौवे गिल्लू के साथ 'छुआ-छुऔवल' कर रहे थे'— इस वाक्य में 'छुआ-छुऔवल' के प्रयोग में है—

   (क) मुहावरा ☐ (ख) प्रतीक ☐

   (ग) व्यंग्य ☐ (घ) लोकोक्ति ☐

3. सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   (क) इस रेखाचित्र में 'गिल्लू' शब्द का प्रयोग .... संज्ञा है। (व्यक्तिवाचक/जातिवाचक)

टिप्पणी

(ख) गिल्लू का कमरे के भीतर और बाहर झाँकना उसके .... परिवर्तन को सूचित करता है। (शारीरिक/व्यवहारगत)

(ग) गिलहरियों में किशोरावस्था का आगमन .... में होता है। (तीन माह/दो वर्ष)

(घ) .... उपसर्ग लगाने से शब्द का अर्थ उल्टा हो जाता है। (सम/अन्)

4. महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों को ध्यान में रखते हुए मिलान करके सही युग्म बनाइए :

नीलकंठ	हिरन
गिल्लू	मोर
गौरा	गिलहरी
सोना	गाय

3.2.3 अंश-3

'फिर गिल्लू के जीवन का .... सोनजुही की पत्तियों में आइए' तक के अंश को एक बार फिर पढ़ते हैं।

लेखिका ने गिल्लू के प्रथम बसंत की बात की है। जीवन का पहला बसंत प्रतीकात्मक प्रयोग है। हमारा जीवन बहुत कुछ ऋतुओं से भी जुड़ा हुआ है। आपने अक्सर महसूस किया होगा कि गर्मी, सर्दी और बरसात के मौसम का हम पर अलग–अलग रूपों में प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार, बसंत ऋतु का हमारे जीवन में अलग ही महत्व है। यह ऋतु हमारे जीवन में उल्लास भर देती है।

एक वर्ष में छह ऋतुएँ होती हैं :

1. ग्रीष्म – गरमी
2. पावस – वर्षा
3. शरद – गुलाबी ठंड
4. शिशिर – तेज़ ठंड
5. हेमंत – पतझड़
6. बसंत – सर्दी का उतार और नयी कोंपलों-फूलों का मौसम

बसंत ऋतु प्रकृति और मानव-जगत के नवीन विकास की प्रेरक है। आपने देखा होगा कि बसंत में पेड़-पौधों और लताओं में नवीन कोंपलें उग आती हैं। उनमें फूल आते हैं। फूलों के पराग कण, दरअसल, उनके बीज होते हैं, जिनसे उस तरह के फूलों के नए पौधे विकसित होते हैं। कुछ वृक्षों-लताओं में ये फूल फल में परिवर्तित हो जाते हैं। फल भी अपने भीतर बीजों को छिपाए होते हैं। तो इस तरह, बसंत प्रकृति की संतति-परंपरा को विकसित करने वाली ऋतु है। इसका प्रभाव प्राणी-जगत, विशेषकर मनुष्य पर भी पड़ता है। इस ऋतु में स्त्री-पुरुष का परस्पर आकर्षण बढ़ जाता है।

लेखिका ने गिल्लू के माध्यम से पशुओं के भीतर पनपने वाले उस मूल भाव की ओर संकेत किया है, जब गिल्लू बड़ा होकर आज़ाद जीवन बिताने की इच्छा रखने लगता। उम्र का यह पड़ाव मानव-जगत को ही नहीं, पशु-जगत को भी आज़ादी की ओर प्रेरित करता है। युवावस्था प्राप्त करने वाला गिल्लू अब जाली से बाहर निकल कर मुक्ति के वातावरण में विचरण करना चाहता है।

मुक्ति की आकांक्षा मनुष्य ही नहीं, समस्त प्राणी-जगत का मूल भाव है। संसार का कोई भी प्राणी बँधकर रहने में स्वाभाविक विकास नहीं कर पाता। आपने यह महसूस किया होगा कि आप जब किसी पालतू पशु को बाँध देते हैं या कमरे में बंद कर देते हैं, तो वह घुटन महसूस करने लगता है और उससे मुक्ति का प्रयास करता है। कई बार तो कुत्ते या कुछ बड़े पशु उस बंधन को तोड़ने के लिए आक्रामक भी हो जाते हैं। इसीलिए, लेखिका गिल्लू के भीतर उठने वाली मुक्ति की आकांक्षा की आहट पाते ही उसे जाली के बंधन से मुक्त कर देती है और गिल्लू अन्य गिलहरियों के साथ अपना अंतरंग संबंध स्थापित कर लेता है। किंतु, इस बीच भी वह लेखिका के स्नेह को भूल नहीं पाता और उसके कॉलेज से लौटने पर वह लेखिका के सिर से पैर तक दौड़-धूप करना नहीं छोड़ता। लेखिका ने इस अंश में यह संकेत किया है कि पशु-जगत के प्रति प्रेम का व्यवहार होने पर वे भी वैसा ही व्यवहार करते हैं और उसे अपने क्रिया-कलापों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह सहज स्वभाव पशु-जगत अथवा मानवेतर प्राणियों में भी वैसा ही होता है, जैसा कि मानव-जगत में।

मुक्ति की भावना में प्राणी की पहचान भी छिपी होती है। मुक्ति मिलते ही उसके व्यक्तित्व के भीतर की चेतना जगने लगती है। लेखिका हमें गिल्लू के माध्यम से यह अहसास कराती है। आपने इस पाठ में पढ़ा है कि जैसे ही गिल्लू बंधन से मुक्त होता है, उसमें नेतृत्व की क्षमता आ जाती है। वह गिलहरी-समाज का नेता बन जाता है। उसमें आत्मविश्वास भर जाता है और इसे वह डाल-डाल पर उछल-कूद कर अभिव्यक्त करता है। इस प्रकार, लेखिका ने यहाँ बंधन और मुक्ति के अंतर को भी हमारे सामने स्पष्ट कर दिया है। इस अंश में लेखिका ने मुक्ति को ही उचित बतलाया है अर्थात् हमारी सार्थकता इस बात में है कि हम मुक्ति का वरण करें, न कि बंधन का; क्योंकि मुक्ति हमें स्वावलंबी बनाती है और बंधन परावलंबी। मनुष्य की सार्थकता भी मुक्त होने में है, लेकिन हमारी मुक्ति दूसरों की मुक्ति के साथ जुड़ी है; वह निरपेक्ष नहीं है। गिल्लू अपनी आज़ादी का तो उपयोग करता है, पर लेखिका के समय के सामंजस्य के साथ!

महादेवी ने गिल्लू को मुक्त करने की बात कही है। वे जाली खोलकर उसे मुक्त करती हैं, तो वह अपने समूह की गिलहरियों से मिलता है। उसके व्यक्तित्व में एक प्रकार का बदलाव आता है और उस बदलाव की अभिव्यक्ति वह विभिन्न रूपों में करता है। इस प्रकार का बदलाव पशु-पक्षियों में ही नहीं, मनुष्य में भी आता है। किशोर-किशोरियाँ समूह में रहकर अपनी भावनाओं को व्यक्त करना चाहते हैं और किसी प्रकार की रोक-टोक स्वीकार नहीं करना चाहते।

टिप्पणी

क्रियाकलाप-3.2

लेखिका ने गिल्लू की किशोरावस्था का और उसके कारण व्यवहार में परिवर्तन का चित्रण किया है। आप भी उम्र के इस दौर से गुज़र रहे होंगे या गुज़र चुके होंगे। किशोरावस्था में क्या-क्या शरीरगत और व्यवहारगत परिवर्तन होते हैं, लिखिए :

किशोरावस्था

शरीरगत परिवर्तन	व्यवहारगत परिवर्तन
1.	1.
2.	2.
3.	3.

3.2.4 अंश-4

आइए, पाठ के 'मेरे पास बहुत से पशु-पक्षी हैं ....ठंडक में भी रहता।' तक के अंश को एक बार फिर से पढ़ लेते हैं।

महादेवी वर्मा को अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों को पालने का शौक था। लेखिका को न केवल शौक था, अपितु उनके प्रति अपार करुणा और स्नेह का भाव भी था। वे सभी के प्रति समान स्नेह का व्यवहार करती थीं। किंतु, गिल्लू उनके लाड़-प्यार का विशेष अधिकारी था। यही कारण था कि वह महादेवी वर्मा की भोजन की थाली में सीधे मुँह लगाकर खाना खाने लगता है। अन्य पशु-पक्षी ऐसा व्यवहार नहीं करते थे, इसीलिए गिल्लू एक अपवाद था। उसके विशिष्ट व्यवहार और क्रियाकलापों की वजह से लेखिका उसे खाने के लिए तो नहीं रोकती, पर उसे इस तरह का संस्कार प्रदान करना चाहती है, जिससे वह एक सभ्य और सुसंस्कृत जीव के रूप में व्यवहार करे। इसीलिए, लेखिका उसे धीरे-धीरे थाली में ही निकालकर खाना सिखाती है और वह उसी के अनुरूप चावल का एक-एक दाना उठाकर खाने लगता है। वह बहुत सफ़ाई से खाता है। एक दाना भी ज़मीन पर नहीं गिराता।

गिल्लू के खाने का अंदाज़ भी अलग था और उसकी रुचि भी विशिष्ट थी। वह खाने में काजू विशेष रूप से पसंद करता था। काजू न मिलने पर या तो वह बाकी चीज़ें खाता ही नहीं था या उन्हें अपने झूले से नीचे फेंक देता था। किशोरावस्था में आपने अक्सर महसूस किया होगा कि यदि किसी को उसकी रुचि की कोई चीज़ मिल जाती है, तो उससे उसे प्रसन्नता होती है। यदि जो चाहिए, वह नहीं मिलता, तो मन खिन्न हो जाता है। आपने गिल्लू के संदर्भ में भी देखा कि वह किस प्रकार काजू न मिलने पर नाराज़ होता था। नाराज़ होने की आदत केवल मनुष्यों में ही नहीं होती, पशु और पक्षियों में